आयुष्मान भव का आशीर्वाद किनको ?

मोदी की हर योजना की तरह 'आयुष्मान भारत' भी एक छलावा निकला

ग्राउंड जीरो से विवेक की पड़ताल

मोदी के बहुप्रचारित आयुष्मान युग की आँखों देखी: बीस बार कह ली तुमसे सरकारी में जाया करो ये क्लिनिक फ्लिनिक लूटने का अड्डा होया करें। ऐसा कहते हुए प्रोफेसर भूप सिंह गुलिया पार्वती क्लिनिक के 8/10 फुटा कमरे में जहाँ उनकी बहन रात से भर्ती थीं, उन्हें देखने के लिए दाखिल हुए - चार बिस्तरों के बाद इस कमरे में बमुश्किल चलने की जगह भी नहीं बची थी।

पलवल नागरिक अस्पताल के सामने 100 मीटर तक लगी लम्बी कतार में 20/30 की दुकानें और उनमें चलते तथाकथित नर्सिंग होम, मानो सरकारी अस्पताल को चुनौती पेश कर रहे हैं कि तेरे दिन अब लदे या तब। पलवल सोहना रोड स्थित नागरिक अस्पताल के ठीक सामने इन क्लीनिकों और दवाई की दुकानों का वातावरण ऐसा कि इनमें मरीज लेकर आये परिजनों को भी बीमार करने का ही धंधा खुलेआम चल रहा हो।

इन क्लीनिकों में पहुँचना भी आसान काम नहीं है। सड़क और इनके बीच एक 6 फीट चौड़ा गंदा नाला है जो अपने खुले दर्शन हर आने जाने वाले को कराता है। दर्शन के लिए इसमें सारे शहर का त्यागा हुआ मलमूत्र है। वैसे जिस हिसाब से गौमूत्र और गोबर को महिमा-मंडित किया जा रहा है उसे देख लगता है यहाँ के सभी चिकित्सकों और मरीजों ने भी ये मान लिया है कि इंसानी मलमूत्र भी पवित्र है। और हो भी क्यों नहीं, इंसान तो सर्वश्रेष्ठ कृति होता ही है ईश्वर की।

नाले को पार करने के लिए जगह-जगह 2 फीट चौड़ा लकड़ी का फट्टा या लोहे की जाली रखी हुई है। यानी अस्पताल आइये और इलाज मिले न मिले एडवेंचर तो हो ही जाएगा आपका। अगर आप सकुशल नाला पार कर किसी क्लिनिक के एमबीबीएस डाक्टर साहब तक पहुँच गए तो आपको सिर्फ वही इलाज करना होगा जिसके लिए आप आये हैं वरना यदि आप गिर गए नाले में तो शायद हाथ पैर टूटने का इलाज भी साथ ही होगा। ये तो कुछ ऐसा ही जान पड़ता है जैसे पंक्चर बनाने वाला ग्राहक की तलाश में सड़क पर कुछ कीलें फेक देता है।

एमडीयू रोहतक में फाइन आर्ट्स विभाग के 58 वर्षीय प्रोफेसर गुलिया की बड़ी बहन करमवती का विवाह फरीदाबाद के पृथला गाँव में हुआ है। पिछले दिनों पति के स्वर्गवास के बाद से ही ज्यादा बीमार रहने वाली इस बहन का बीपी 15 सितम्बर को यकायक 480 हो गया। आनन-फानन में बेटा अजय पलवल के इस गंदे नाले किनारे स्थित पार्वती क्लिनिक में ले आया जहाँ इलाज के नाम पर मरीज को चार सुइयां लगाई गईं। डाक्टर साहब ने बताया कि भर्ती करना बहुत जरूरी है सो वह भी करा दिया।

सुबह जब गुलिया जी ने लोकेशन की बजबजाती गन्दगी देखी तो दिमाग भन्ना गया। नाराज होते हुए पहले तो रिसेप्शन पर बैठे 45 किलो के एक नवयुवक को डांट पिलाई और फिर 9 बजे तक डाक्टर के न आने का कारण पूछा। अब गेंद इस नवयुवक के पाले में थी सो तपाक से जोशीली आवाज में बोला, ऐसा है जी हर कुछ घंटों में मरीज बड़े अस्पतालों में देखे जाते हैं, यहाँ नहीं, साहब 10.30 पर आएँगे।

अब गुलिया जी का गुस्सा कुछ और ऊपर के पायदान पर आ गया। जिम्मेदार लहजे में वहाँ बैठी एक लड़की सुमन से पूछा, ये गन्दा नाला जो खुला पड़ा है इसको आप लोग ढकते क्यों नहीं। जवाब मिला कि ये काम हमारा नहीं है, या तो सरकार करे या दुकान के मालिक, डाक्टर साहब तो किरायेदार हैं बस। और आप क्या बात करते हैं? जवाब मिला, ये जो सामने सरकारी अस्पताल है वहाँ तो डाक्टर भी नहीं आता, यहाँ कम से कम डाक्टर तो आता है।

पलवल का पारवती हॉस्पिटल

लड़की कि बात में वजन था क्योंकि अगर ऐसा न होता तो क्या कारण है जो इतनी गन्दगी में बसे प्राइवेट क्लीनिकों में ये मरीज लुटने को चले आ रहे हैं। और तफतीश करने पर जान पड़ा कि माजरा इतना भर नहीं है। वहाँ आये मरीजों के परिजनों में से 32 वर्षीय व्यक्ति अजय ने बताया कि सरकारी अस्पताल में तो डाक्टर वक्त पर देखने तक नहीं आते, यहाँ कम से कम डाक्टर आ जाता है तो दिल को तसल्ली हो जाती है।

पास खड़ी लड़की कुसुम ने बताया कि परिवार के दो सदस्य अपनी जान इसी तरह के नर्सिंग होम में गँवा चुके हैं फिर भी उसके घर के मर्द हर मरीज को ऐसे ही किसी नाला छाप में भर्ती करने को विवश हैं। कारण कि सरकारी अस्पतालों में न मानवीय व्यवहार किया जाता है ना ही उनको अब भरोसा है सरकारी संस्थान पर। और फिर प्राइवेट में भले पैसे लगते हैं पर लगता है इलाज तो मिल रहा है।

भारतवर्ष में सरकारी कामचोरी के चलते निजी मुनाफाखोरी ने ऐसी जड़े जमा ली हैं कि जानते बूझते सब विष पीये जा रहे हैं और दलील ये कि इससे कम से कम चैन से तो मर सकेंगे। बात भी ठीक है जब देश का प्रधानमंत्री ही राफेल जैसे रक्षा सौदों में दलाली खा कर प्राइवेट लूट को आगे बढ़ाये और फिर सरकारी कंपनियों को अपनी रक्षा मंत्री से हतोत्साहित कराये तो जनता क्या करेगी ?

इस बीच क्लिनिक के डाक्टर डी के सिंह भी आ गए, पूछने पर झेंपते हुए बोले कि हम किराया दे कर जीवन चला रहे हैं, अब ये साफ सफाई का काम निगम का या मालिक का होना चाहिए। एक किरायेदार के तौर पर नाले को ढकना या उसकी देख रेख तो नहीं कर सकते। और तभी लैंडलॉर्ड भी कमरे में दाखिल हो गए। अपना परिचय बीएस रावत, एमए बीए फ्रॉम पंजाब यूनिवर्सिटी चंडीगढ़ बताते हुए बोले हाऊ मे आइ हेल्प यू ?

नाले की बदबू , हाइजीन और गन्दगी पर हमें चाय पिलाने का पोछा मारते हुए बोले अरे सर देखिये सूंघ कर बताइए क्या आपको बदबू आ रही है ? दरवाजा बंद है तो बदबू नहीं है, इसलिए कोई दिक्कत नहीं। मरीज को भी बदबू नहीं आती और वैसे भी थोड़ी देर में आदत पड़ जाती है तो दिक्कत नहीं होती, यकीन नहीं तो मरीज से पूछ लीजिये। और एक मरीज से उनके पूछने पर मरीज ने भी उनके दावे की पुष्टि कर दी।

अपनी जीत की खुशी में रावत जी हमारी टीम को इन दुकानों के पीछे बने अपने आलीशन मकान में ले गए जहाँ पता चला कि वहां की 100 मीटर की सभी दुकानों पर मालिकाना हक इन्ही का है। इतना पैसा और एक नाला नहीं ढक सकने के सवाल पर रावत जी बोले कि निगम बिक गया है जी, हम खुद कुछ करें तो भी ये तोड़े जाएंगे। खुद निगम कुछ करता नहीं, क्या करें ?

दो दिन के बाद करमवती को इस अस्पताल से छुट्टी मिल गई। नाले वाले क्लिनिक में रहने के दाम दिल्ली के तीन सितारा होटल से कुछ कम नहीं। 8500 रूपए का बिल और वो भी चार सुइओं का। ये है आयुष्मान का ढोल पीटने वाली स्वास्थ्य व्यवस्था का असल चेहरा। यह सिर्फ पलवल की कहानी नहीं है। फरीदाबाद, गोरखपुर, वाराणसी, आजमगढ़, रांची, वेल्लूर, लेह, गंगानगर, भोपाल, यानी भारत के सभी 640 जिलों का एक सा हाल मिलेगा।

आयुष्मान भारत योजना की कथा सुनाने वाले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 23 सितम्बर को रांची से इस योजना का शुभारम्भ कर दिया। बीमा कम्पनियों की जेबें गरम करने का ये धंधा 10 करोड़ बीपीएल परिवारों को लाभान्वित करेगा, ऐसा उनका दावा है। योजना में मोदी ने गरीबों को फोर्टिस और मैक्स जैसे प्राइवेट अस्पतालों तक में इलाज करा सकने का दावा पेश किया है जिसका खर्च सरकार बीमा कंपनियों के माध्यम से वहन करेगी।

गौर से देखने पर पाएंगे कि इस योजना में ज्यादतर वे बीमारियाँ गायब हैं जो गरीब को आम होती हैं। हां हार्ट अटैक, जैसी अमीर बीमारियों को जरूर शामिल किया गया है। योजना में पंजीकरण करने पर एक एसएमएस आपके मोबाइल फोन पर आएगा जिसे संभालना बहुत जरूरी है। यानी हर बीपीएल वाला पहले एक मोबाइल ले और उसे रिचार्ज कराये। ऐसी सतही समझ के साथ बनने वाली योजनाओं का सच कुछ और ही होता है।

हर जगह सरकारी तंत्र को सरकार खुद विफल करती है ताकि मुनाफा आधारित लूट तंत्र विकसित हो और चुनाव का चंदा पार्टी को मेज के नीचे से मिलता रहे, साथ ही नेताओं और अफसरों की जेब भी भर दे। वरना सोचिये, क्या ये संभव है कि सरकार द्वारा बनाये गए मापदंडों को ताक पर रख एक व्यक्ति जिसे ये नहीं पता कि पंजाब यूनिवर्सिटी जहाँ से वो एमए बीए है कहां स्थित है, लैंडलॉर्ड किराये पर अस्पताल चलवा नोट भरे बैठा है और वो डाक्टर जिसको हाइजीन का पाठ पढ़ा-पढ़ा कर तैयार किया गया, वह गंदे नाले के किनारे मरीजों से पैसे उगाह रहा है।

देखा जाए तो डाक्टर भी रोजगार का अवसर न मिलने की सूरत में अभिशप्त हैं, मजबूर बने नाले पर इलाज का ढोंग करने को। यदि सरकार इनको सही रोजगार मुहैया कराती तो सरकारी अस्पताल भी बने रहते और उनमे आने वाले मरीज भी। देश की राजधानी से महज सत्तर किलोमीटर पर गंदे नाले की सड़न में काम करते पारवती क्लिनिक की इस झलक में देश की स्वास्थ्य प्राथमिकता को लेकर आपराधिक सरकारी रवैया और पूंजीवादी व्यवस्था की लूट के साथ ही गरीब जनता की बेबसी को भी साफ देखा जा सकता है।

मात्र 47 वर्ष में जर्जर हुई नेहरू कॉलेज की इमारत, 14 करोड़ में नई बनेगी

100-100 साल पुराने स्कूल, कॉलेज भी सलामत खड़े हैं

फ़रीदाबाद (म.मो.) सेक्टर 16 ए स्थित राजकीय नेहरू कॉलेज की इमारत 1971 में हरियाणा सरकार द्वारा बनवाई गयी थी। आज इस में बैठना सुरक्षित नहीं है। वैसे तो इसकी 10 वर्ष पहले ही इसकी हालत खस्ता हो चुकी थी, लेकिन इसका निर्माण करने वाले विभाग (पीडब्लूडी) ने इसे गत वर्ष ही कंडम घोषित करके नई इमारत की अनुमानित लागत 14 करोड़ आंकी है। बजट मंजूरी के लिये सरकार को भेज दिया गया है। साल दो साल में मंजूर होकर आ जायेगा। उसके बाद साल दो साल में निर्माण कार्य शुरू होगा, यदि कोई अड़ंगा न पड़ा तो। नई इमारत के बजट की बात तो चल पड़ी लेकिन यह पूछने वाला कोई नहीं कि इतनी जल्दी यह इमारत कंडम कैसे हो गयी जबकि पीडब्लूडी द्वारा लाखों रुपये प्रति वर्ष इसके रख-रखाव पर खर्च होता रहा ? कौन थे वे लोग जो जनता के पैसे को डकार गये ?

दूसरी ओर इसी हरियाणा व दिल्ली में अनेकों स्कूल व कॉलेज ऐसे हैं जिनकी इमारतें 100 या इससे भी अधिक पुरानी हैं। वे इमारतें, यदि सरकारी हैं तो ब्रिटिश राज की हैं अन्यथा निजी संस्थाओं द्वारा बनवाई गयी थी। दिल्ली युनिवर्सिटी के नार्थ कैम्पस के श्री राम कॉलेज सेंट स्टीफन्स आदि इसी श्रेणी में आते हैं। रोहतक, सोनीपत, हिसार व करनाल में भी इसी तरह की पुरानी इमारतें बड़ी शान से कैसे खड़ी हैं जैसे कभी जर्जर होने वाली नहीं।

यह सब ईमानदारी व भ्रष्टाचार में अन्तर के कारण है। बीते 40 वर्षों में जिस गति से भ्रष्टाचार बढ रहा है उसे देखते हुये लगता नहीं कि नेहरू कॉलेज की नई बिल्डिंग 40 सालभी पकड़ पायेगी। पहले भवन निर्माण कार्य में केवल विभागीय कर्मचारी-अधिकारी मामूली कमीशन खाते थे, अब कमीशन को तो वे अपने वेतन का हिस्सा मानने लगे हैं। इसलिये कमिशन के अतिरिक्त माल की चोरी भी करवाते हैं। इतना ही नहीं विभागीय अधिकारियों के साथ-साथ अब राजनेता भी इस लूट में अपना हिस्सा बंटाने में पीछे नहीं रहते।

कॉलेज की मौजूदा बिल्डिंग जो 4-5 हज़ार छात्रों के लिये बनाई गयी थी, इसमें आज करीब 7000 छात्र भर रखे हैं। इस लिये नई बिल्डंग को 15000 छात्रों की क्षमता वाली बनाने की योजना है। तरस आता है इन योजनाकारों पर। संभावित 15000 छात्रों को पढाने के लिये कम से कम 300 शिक्षक व 300 अन्य स्टाफ़ की जरूरत होगी। कोई नहीं सोचता कि इतनी बड़ी संख्या को सम्भालेगा कौन ? योजनाकारों की यदि अक्ल से दुश्मनी न होती तो आज से 10 साल पहले ही 5-5 हज़ार क्षमता के कॉलेज शहर के विभिन्न भागों में खोले जा सकते थे। इससे एक स्थान पर होने वाली भीड़ से तो बचाव होगा ही साथ में छात्रों को अपने घरों के नज़दीक कॉलेज उपलब्ध होने से आवागमन की भीड़ भी कम होगी।

वैसे धूल में लठ मारने वाले इन योजनाकारों से बहुत ज़्यादा उम्मीद करनी भी नहीं चाहिये क्योंकि अभी तो इनके पास बल्लबगढ़, मोहना व नचोली के कॉलेज बनाने का जुगाड़ नहीं है, नेहरू कॉलेज कहां से बना देंगे ? लिहाज़ा इसे मात्र जुमला ही समझा जाना चाहिये।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 1 डी/2बी.पी. नियर हार्डवेयर चौक, एनआईटी फरीदाबाद से प्रकाशित किया। Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06